B.A-II (Hons+Sub)

Paper-III

Unit-II

Topic - Some important characteristics of Unconscious

अचेतन की कुछ विशेषताएँ

(IV) अचेतन व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर होता है (Unconscious is beyond the Control of the Person) - अचेतन की इच्छाएँ व्यक्ति के नियंत्रण रेखा से बाहर होती हैं। चूँकि अचेतन के बारे में व्यक्ति पूर्णतः अनभिज्ञ रहता है, इसलिए उसपर उसका किसी प्रकार का कोई नियंत्रण होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। व्यक्ति अचेतन के बारे में इसलिए अनभिज्ञ रहता है क्योंकि अचेतन का सम्बन्ध वास्तविकता से नहीं होता है।

(V) अचेतन में बिना किसी प्रकार के द्वन्द्व के ही परस्पर विरोधी इच्छाएँ और भावनाएँ संचित होती हैं (Unconscious stores Contradictory wishes and antagonistic impulses without any Conflict) - अचेतन मन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें परस्परविरोधी इच्छाएँ एवं विचार आसानी से संचित रहते हैं। चेतन मन के लिए एक ही समय में दो परस्परविरोधी इच्छाओं को संचित करके रखना सम्भव नहीं है। इसका कारण यह है कि अचेतन में संचित विभिन्न तरह की परस्परविरोधी इच्छाओं से व्यक्ति अवगत नहीं रहता है। फलतः उसे किसी प्रकार के मानसिक संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ता है और वे ढीक ढंग से उसमें संचित रहते हैं और इनसे व्यक्ति को किसी प्रकार का मानसिक संघर्ष भी पैदा नहीं होता है क्योंकि व्यक्ति इन सबसे अवगत नहीं रहता है।

(VI) अचेतन अपनी इच्छाओं की संतुष्टि या अभिव्यक्ति छद्म रूप में करता है। (Unconscious Satisfies or expresses its desire in disguised form) - अचेतन मन की इच्छाएँ घृणित, असामाजिक एवं अनैतिक होती हैं। ऐसी इच्छाएँ हमेशा अपनी अभिव्यक्ति या संतुष्टि मन में चाहती हैं और इसके

लिए वे काफी क्रियाशील रहती हैं। लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हो पाता है कि अहं तथा चेतन मन का कड़ा प्रतिबन्ध होता है जो उन्हें चेतन में आने देने से रोकता है। फलस्वरूप अचेतन की इच्छाएँ वेश - बदलकर या क्षद्म रूप में स्वप्नों या दैनिक जीवन की भूलों के माध्यम से व्यक्त होती हैं।

(iii) अचेतन मन का छिपा हुआ पहलू होता है (Unconscious is the latent aspect of mind) - अचेतन मन को व्यक्ति सीधे बाह्य प्रेक्षण द्वारा नहीं अध्ययन कर सकता है और न ही व्यक्ति स्वयं अन्तर्निरीक्षण द्वारा ही उसके अस्तित्व को प्रमाणित कर सकता है क्योंकि यह मन का एक अव्यक्त पहलू होता है। उसके अस्तित्व को मात्र परोक्ष रूप से कुछ प्रमाणों जैसे स्वप्न तथा दैनिक - जीवन की भूलों आदि द्वारा ही प्रमाणित किया जा सकता है। अतः अचेतन मन एक बिजली की प्रवाह के समान होता है जिसे सीधे देखा तो नहीं जा सकता है परंतु उसके प्रभावों के आधार पर उसके अस्तित्व को समझा जा सकता है।

इस तरह से हम देखते हैं कि अचेतन मन की कई विशेषताएँ हैं जिनके अध्ययन से अचेतन मन के स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान हमें हो जाता है।

//